

CONTENTS

| | |
|---|---------|
| Publisher's note | i |
| About Māsopavāsī, Samādhisamrāṭa Ācārya 108 Śrī Sumati Sāgara Jī Mahārāja | ii-iii |
| Blessings of Parama Pūjya Upādhyāya 108 Śrī Gyan Sāgara Jī Mahārāja | iv |
| Gratitude Unbound | v |
| Editorial note | vi-vii |
| List of Contributors | xii-xiv |
| List of Illustrations | 404-408 |

English Section

| | |
|--|-------|
| 1. Jainism | |
| Dr. A. K. Bandyopadhyay | 01-11 |
| 2. Nudity of Jain Monks | |
| Prof. Ashok K. Jain | 12-16 |
| 3. Jaina Inscriptions from Khajuraho | |
| Prof. A. K. Singh | 17-23 |
| 4. Bhand Deul, Arang | |
| Anil Kumar Tiwari | 24-28 |
| 5. Jaina Remains from Agra Region With Special Reference to Bir Chhabili Tila, Fatehpur Sikri | |
| Arakhit Pradhan | 29-37 |
| 6. Caturvimsati or Caubisi Tirthankaras-With Special Reference to the Jaina Sculptures in Salar Jung Museum | |
| Dr. Balagouni Krishna Goud | 38-43 |
| 7. Date of Acarya Kundakund | |
| Prof. Bhagchandra Jain | 44-52 |
| 8. Jain Tirthas of Madhya Pradesh – A Vital Tourist Product | |
| Prof. C. D. Singh, Dr. Achyut Singh and Dr. Prashant Kumar Singh | 53-67 |
| 9. Jainas in Vidarbha | |
| Prof. Chandrashekhar Gupta | 68-70 |

| | |
|---|---------|
| 10. Jain Monuments in Tamil Nadu-A Brief Account | |
| C. T. M. Kotraiah | 71-80 |
| 11. Svayambhūdeva on the anupreksās (Paūmacariu 54.5-16) | |
| Dr. Eva de Clercq | 81-98 |
| 12. Salient Features of Jaina Epigraphs of Andhra | |
| Dr. G. Jawaharlal | 99-105 |
| 13. Jainism in Uttara Kannaḍa Region | |
| Dr. Ganapathy Gowda. S | 106-114 |
| 14. Ambikā in Bengal Sculptures | |
| Dr. Gaurisankar De | 115-118 |
| 15. The Concept of Śāstra-Dāna: Socio-Cultural Dimensions | |
| Dr. Hampa Nagarajaiah | 119-127 |
| 16. Glimpses of Hydrology in Jainism | |
| H. Sreenivasa Rao | 128-133 |
| 17. Jaina Traditions and Archaeological Remains: Some Observations | |
| J. Manuel and Dr. P. Chennareddy | 134-146 |
| 18. Mahavira (1882 BC to 1810 BC) | |
| J. P. Mittal | 147-152 |
| 19. Saraswati, Goddess of Knowledge and Scripture | |
| Prof. Dr. John E. Cort | 153-158 |
| 20. The Jains and the Yadavas of Devagiri | |
| Dr. Kamal Chavan | 159-161 |
| 21. The Commentator's Ethics: Abhayadeva's Colophon to his Vṛtti on the Sthānāṅgasūtra | |
| Dr. Kornelius Kruempelmann | 162-169 |
| 22. Jaina Sculptures and Paintings in the United Kingdom | |
| Prof. Dr. M. N. P. Tiwari | 170-180 |
| 23. Jain and Bön Maps as Historical Sources for the Medieval Period | |
| Dr. M. N. Rajesh & Malsawmdawngliana Lailung | 181-186 |
| 24. Jaina Bronzes in Northern Madhya Pradesh | |
| Dr. Navneet Kumar Jain | 187-193 |
| 25. A Newly Discovered Jaina Sarvatobhadrikā Image of Gupta Period from Tumain, dist. Ashoknagar, Madhya Pradesh | |
| Dr. Navneet Kumar Jain & Dr. S. K. Dwivedi | 194-196 |
| 26. Jains Living Outside India | |
| Pierre P. Amiel | 197-206 |
| 27. The Trikūta Form of Temples and Their Influence on Jainism in South India | |
| Dr. P. Rama Chandra Murthy | 207-212 |
| 28. A Short History of Jain Law | |
| Prof. Dr. Peter Flügel | 213-219 |

| | |
|--|---------|
| 29. Role of Remote Sensing in Archaeology with special reference to Jainology around the Gwalior Fort | |
| Dr. P. K. Jain | 220-226 |
| 30. Jain Society in the Nagpur State | |
| Dr. Prabhakar Gadre | 227-228 |
| 31. Chhaprā image inscription of Chandella King Paramarddideva (Samvat 1229) | |
| Dr. S. K. Bajpai | 229-230 |
| 32. Early Jain Archaeology of Madhya Pradesh | |
| Dr. S. K. Dwivedi | 231-234 |
| 33. Meditation in Jain Scriptures | |
| Sanchita Ghosh and Dr. Jayant S. Joshi | 235-239 |
| 34. Jaina Tirthankara Images in Orissa State Museum, Bhubaneswar | |
| Santosh Kumar Rath | 240-248 |
| 35. Digamberism of Jinas is the Root Culture of Indus Civilization | |
| Dr. Sneh Rani Jain | 249-258 |
| 36. The Ajita-Purāṇa of Ranna | |
| Stefan Anacker | 259-269 |
| 37. Study of Jain Icons of Gwalior Fort (upto 13th century AD) | |
| Sujata Gautam | 270-273 |
| 38. Kalānidhi: A Jaina Encyclopedia by Vaidyanātha | |
| Dr. Usha Ranade | 274-276 |
| 39. Jain Education | |
| Dr. V. Sakuntala | 277-292 |
| 40. Jaina Tradition and Mathura | |
| Vinay Kumar Gupta | 293-298 |

Hindi Section

| | |
|--|---------|
| ४१. वैदिक एवं श्रमण संस्कृति में इदवाकु परम्परा | |
| डॉ. ईश्वरशरण विश्वकर्मा | 299-306 |
| ४२. भारतीय दर्शन परम्परा में जैन धर्म-दर्शन का स्थान | |
| डॉ. गोविन्द गन्धे | 307-309 |
| ४३. बुन्देलखण्ड की अनमोल धरोहर सिद्धेश्वर सोनागिर | |
| डॉ. जया जैन | 310-311 |
| ४४. समसामयिक समस्याओं के संदर्भ में प्राचीन जैन संस्कृति की प्रासंगिकता | |
| डॉ. जिनेन्द्र जैन | 312-317 |
| ४५. वर्ण एवं जाति विषयक जैन सिद्धांत | |
| डॉ. एम. प्रसाद एवं डॉ. जिनेन्द्र जैन | 318-321 |

| | |
|---|---------|
| ४६. जैन साहित्य में दासों की स्थिति | |
| डॉ. महेन्द्र नाथ सिंह एवं अरविन्द कुमार सिंह | 322-325 |
| ४७. जैन आगम साहित्य में विवाह | |
| डॉ. महेन्द्र नाथ सिंह एवं प्रदीप कुमार शर्मा | 326-328 |
| ४८. जैन आगम साहित्य में गणिकायें | |
| डॉ. महेन्द्र नाथ सिंह एवं विपिन कुमार शर्मा | 329-331 |
| ४९. विन्ध्य प्रदेश की सर्वतोभद्रिका प्रतिमाएं | |
| मनोज कुमार सिंह एवं प्रो. सी. डी. सिंह | 332-334 |
| ५०. स्थानीय पुरातत्व संग्रहालय महोन्द्रा, जिला पन्ना (मध्य प्रदेश) की जैन मूर्तियां | |
| नरेश कुमार पाठक | 335-337 |
| ५१. खन्दार (जिला-अशोकनगर, मध्य प्रदेश) स्थित प्राचीन जैन शैलकृत गुहा मंदिर एवं मूर्तियां | |
| डॉ. नवनीत कुमार जैन एवं टीकम तेनवार | 338-341 |
| ५२. जैन धर्म दर्शन में सम्यग्ज्ञान: स्वरूप एवं महत्व | |
| प्रो. फूलचन्द्र जैन | 342-350 |
| ५३. मेवाड़ की प्राचीन जैन चित्रांकन-परम्परा | |
| डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ | 351-358 |
| ५४. जैन संस्कृति की अदुष्णता का आधार - सामंजस्य | |
| राजेश तिवारी एवं प्रो. सी. डी. सिंह | 359-361 |
| ५५. जैन आगम में पर्यावरण और आचार | |
| डॉ. रजनीश शुक्ल | 362-365 |
| ५६. जैन धर्म में गृहस्थ नारी: एक ऐतिहासिक अध्ययन | |
| डॉ. रामकुमार अहिरवार | 366-375 |
| ५७. जैन दर्शन में रंगों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण | |
| डॉ. (श्रीमती) साधना जैन | 376-379 |
| ५८. मथुरा की एक महत्वपूर्ण पारश्वनाथ प्रतिमा | |
| शैलेन्द्र कुमार रस्तोगी | 380 |
| ५९. देवगढ़ की कला में आचार्य एवं उपाध्याय तथा उनका योगदान | |
| डॉ. शान्ति स्वरूप सिन्हा | 381-384 |
| ६०. भगवान महावीर एवं उनके सिद्धांतों की प्रासंगिकता | |
| डॉ. एस. एम. त्रिपाठी | 385-387 |
| ६१. वीरसिंहपुर (पाली) से प्राप्त तीर्थंकर ऋषभनाथ प्रतिमा-एक विश्लेषण | |
| डॉ. एस. के. द्विवेदी एवं एस. डी. सिसौदिया | 388-389 |
| ६२. प्राचीन बिहार में जैन धर्म-कलावरोधीय विश्लेषण | |
| डॉ. विमल चन्द्र शुक्ल | 390-395 |
| ६३. उत्तरी मध्यप्रदेश के जैन अभिलेखों की लिपि (११वीं से १३वीं शती ई. तक) - एक अध्ययन | |
| यशवंत सिंह | 396-403 |